



संगम Impact Factor : 4.553

विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037
SANGAM

Vol. 11, Issue 5-6

पृष्ठ : 36-47

उद्यम सिंह नगर के बाढ़ सम्भावित क्षेत्रों का भौगोलिक अध्ययन

(रुद्रपुर ब्लॉक के विशेष संदर्भ में)

सूरज कुमार, शोध छात्र

डॉ. कमला बोरा, असिस्टेंट प्रोफेसर

भूगोल विभाग, एस0 बी0एस0 पी0 जी0 कॉलेज, रुद्रपुर।

सारांश :-

बाढ़ मनुष्य और पर्यावरण के बीच विनाशकारी पारस्परिक क्रियाओं में से एक हैं। बाढ़ आपदा जो एक ओर उपजाऊ मैदान का निर्माण करती तो दूसरी ओर आवासीय क्षेत्रों में विनाशकारी प्रभाव डालकर मानव जीवन के साथ ही वन्य जीव-जन्तुओं के जीवन को भी अस्त-व्यस्त कर देती है। मनुष्य द्वारा अभी तक अपदाओं को अपने अनुकूल करने अथवा उस पर नियन्त्रण रखने में ठोस कामयाबी नहीं मिल पायी, परन्तु वर्ष दर वर्ष ऐसी अपदाओं के सम्पर्क में आने से मनुष्य अपने ज्ञान और अनुभव के अधार पर यह अवश्य समझ गया है कि ऐसी विनाशकारी आपदाओं पर नियन्त्रण नहीं किया जा सकता लेकिन सजग रहकर व उचित प्रबन्धन के माध्यम से इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है। भारत में बाढ़ लगभग हर साल आती है इस प्राकृतिक आपदा को नियंत्रित करने की तमाम कोशिशों के बावजूद अचानक नदियों में जब बहाव अधिक होता या उनका रास्ता बदलता जाता है तो इंजीनियरों एवं वैज्ञानिकों की सारी योजनाएं विफल हो जाती जो इन्हे आश्चर्य में डाल देती हैं। हाल ही के वर्षों में आयी अनेक बाढ़ आपदाओं के बाद यह आम शिकायत रही है कि बाढ़ नियंत्रण के मद में होने वाले भारी खर्च का अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पाता है।

बीते एक दशक में बढ़ती बाढ़ की घटनाओं, जनसंख्या वृद्धि और अतिक्रमण होते नदी तट से यह भी स्पष्ट है कि नदी के अपवाह क्षेत्रों में मानव निर्मित संरचनाओं के कारण नदी के निर्गत और तलछट के बीच का संतुलन प्रभावित हुआ है। विभिन्न प्रकार की आपदायें यहां दृष्टि गोचर होती है जैसे बाढ़, भूकम्प, चक्रवात, भूस्खलन, सूखा आदि है, समय-समय पर इन प्राकृतिक आपदाओं से वृहद जन समुदाय को जान माल की क्षति होती है। इसलिए भारत विश्व के सबसे ज्यादा आपदा वाले देशों की श्रेणी में गिना जाने लगा है। वर्ष 2008 की विनाशकारी बाढ़ से उत्तर बिहार और नेपाल के 30 लाख से ज्यादा लोगों को प्रभावित किया था। उत्तराखण्ड में प्राकृतिक आपदाओं में बाढ़ एक प्रमुख आपदा है जो बादल फटने, अत्याधिक वर्षा होने व बांध के टूटने जैसे कारणों से आती है इसमें अत्याधिक मात्रा में जल ग्रामीण, शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ मैदानी भू-भागों में एकत्रित होकर अनियंत्रित रूप से भू-खण्ड जल समाधि ले लेते है जिसे जल सैलाब नाम से भी जाना जाता है। इससे

मई-जून 2023

(36)

संगम



भी धारा प्रवाह में अवरोध होने से बाढ़ की विभिन्निका में वृद्धि हो रही है।

अतः आवश्यकता है कि पर्यावरण संरक्षण व जागरूकता कार्यक्रम स्थायी स्तर पर चलाये जाए, अधिक से अधिक वृक्ष नदी तटों पर लगाये जाये नदी व तटों को सभी प्रकार के अवरोधों और अतिक्रमण से मुक्त रखा जाए, जिससे धारा प्रवाह नदी में सुचारू रूप से बना रहे तथा बाढ़ आपदा के प्रभाव को कम किया जा सके।

संदर्भ/ग्रन्थ (Bibliography) :-

1. Asthana, A.K.L. and Asthana, Harshita (2014)- Geomorphic cloudburst and flash floods in Himalaya with the special referenceto Kedarnath area of Uttarakhand, India International Journal of Advancement in the Earth and Environmentle science, 2(2), pp.16-24
2. Khanduri, Sushil (2017)- Disaster hit Pithoragarh Districtof Uttarakhand Himalaya: Causes and implications. Int. J. Geor. Nat. Disast., 7(2), pp.1-5
3. Rautela, P. (2012)- Investigations in the Asi Ganga valleyon the aftermath of flash flood/landslide incidents in August in 2012. Technical Report, Disaster Mitigation & Management Center, Dehradun, pp.1-48
4. Pant, Vedika and Pande, Ravindera k. (2012)-Community Based Disaster Risk Analysis (CBDRD): Case Studies from Uttarakhand, India. Global Journal of Human-Science(US). pp-2
5. Khundari, Sushil. and Sajwan, K.S. (2016)-Flash flood in Himalayawith with special reference to Mori Tehsil of Uttarakhand, India. publication, IJCRM, pp10-18
6. Pankaj G & Anand, S. (2018) - Flash Flood and its mitigation: A case study of Almora Uttarakhand. India Journal of Environmental Hazard1:104.
7. Sinha Anil (2012) "Natural disaster management in Indian" country report relif Administration in India. P.P. 01-23
8. Saxena Rashmi (2007) – "Monsoon floods A Recurring Hazard FOCUS Vol-01 P.P. 01-20
9. Rana Narendra Kumar and Tyogi Nutan (2008) - Assesment of flood risk zone using R. S and GIS a study of Gorakhpur UP Geographical review of india Vol- 70- P.P. 304-315.
10. Bhattacharjee N and Barman. R (2009) "Flood and their Hazard Impact in Flood plain dwellers in mangalai sub division assam : A studay in Geographical.

mail id-20692suraj@gmail.com

संस्कृत-पूज 2023

(47)

संगम

